विज्ञान में शोध पत्रों की चोरी

गीता चड्ढा

"इस पृष्ठ पर सैद्धांतिक भौतिकी में शोध पत्र की चोरी की एक हैरतअंगेज़ घटना का विवरण दिया जा रहा है। इस घटना में एक उच्च पदस्थ भारतीय वैज्ञानिक और उसका एक छात्र शामिल हैं। यदि आप भारतीय विज्ञान से सरोकार रखते हैं या भारत में विज्ञान का काम करते हैं तो इस पृष्ठ की सामग्री को देखकर अपना मत बनाइए और उसे ज़ाहिर कीजिए। यहां हमने तथ्यात्मक जानकारी प्रस्तुत की है, जिससे यह साबित हो जाता है कि शोधपत्र की चोरी की गई है। इस चोरी में शामिल लोगों की पहचान भी स्पष्ट है। यह पृष्ठ इस उम्मीद में बनाया गया है कि इस लज्जाजनक कृत्य में लिप्त लोगों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जाएगी। इन लोगों की करतूत भारत में विज्ञान के हितों व प्रतिष्ठा के लिए गंभीर खतरा है।"
(फिजिक्स प्लेजिएरिज़्म एलर्ट)

यह वक्तव्य फिजिक्स प्लेजिएरिज़्म एलर्ट नामक एक वेबसाइट(http://geocities.com/physicsplagiarism) से लिया गया है। यह वेबासाइट भारत के दो अग्रणी वैज्ञानिकों - हरीशचंद्र रिसर्च इंस्टीट्यूट इलाहाबाद के अशोक सेन और टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फण्डामेंटल रिसर्च के सुनील मुखी ने स्थापित की है। अशोक सेन और सुनील मुखी देश के दो महत्वपूर्ण कण-भौतिक शास्त्री हैं। इस वेबसाइट को देश के अन्य 20 वैज्ञानिकों का समर्थन प्राप्त है। ऊपर उद्धरित पर्चा तब लिखा गया था जब कुमाऊं विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग की अध्यक्ष कविता पाण्डे ने एक 'स्कैण्डल' उजागर किया था। इस स्कैण्डल में कुमाऊं विश्वविद्यालय के उपकुलपति बी.एस. राजपूत और एक छात्र सुरेशचंद्र जोशी शामिल थे।

वेबसाइट और मीडिया खबरों ने इस मामले से जुड़े कई महत्वपूर्ण तथ्य सामने रखे हैं और वैज्ञानिक समुदाय के मत भी सामने आए हैं। कई वैज्ञानिकों ने तमाम सरकारी संस्थाओं को पत्र लिखकर मांग की है कि अकादमिक भ्रष्टाचार के दोषियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाए। स्टेन्फर्ड विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने तो राष्ट्रपति अब्दुल कलाम को भी इस सम्बंध में पत्र लिखा है।

घटनाक्रम

मई 2002 में बी.एस. राजपूत के शोध छात्र सुरेशचंद्र जोशी ने सार्वजनिक रूप से घोषित किया था कि उसे अब्दुस सलाम अंतर्राष्ट्रीय सैद्धांतिक भौतिकी केंद्र, ट्रिएस्ट, इटली द्वारा वर्ष 2002 के अब्दुस सलाम अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चुना गया है। यह भी कहा गया कि यह पुरस्कार उसे 'स्ट्रिंग सिद्धांत व ब्लैक होल्स' पर उसकी डॉक्टरेट थिसीस के लिए दिया गया है। इस पुरस्कार की जानकारी स्थानीय अखबारों में भी छपी थी। और उसके थिसीस निर्देशक बी.एस. राजपूत ने विश्वविद्यालय के बुलेटिन में 'बधाई संदेश' भी छपवा दिया था। सुरेशचंद्र जोशी एक पखवाड़े के लिए ट्रिएस्ट (इटली) गया भी। मगर मई में पुरस्कार की घोषणा के बाद जो कुछ हुआ उसकी तहकीकात अब मीडिया में चल रही है। मई में जोशी के पुरस्कार की बात सुनकर विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग की अध्यक्ष कविता पाण्डे ने विस्तृत जानकारी मांगी।

जोशी ने वह पत्र प्रस्तुत किया जो कथित रूप से अंतर्राष्ट्रीय सैद्धांतिक भौतिकी केंद्र से आया था। इस पत्र पर केंद्र के उच्च ऊर्जा भौतिकी विभाग के अध्यक्ष रैण्डीबार-डेमी के हस्ताक्षर थे। कविता पाण्डे ने खोजबीन की तो पता चला कि यह पत्र जाली था। रैण्डीबार-डेमी के मुताबिक केंद्र ने जोशी को स्ट्रिंग सिद्धांत की एक कार्यशाला में आमंत्रित भर किया था। इस तथ्य के सामने आने के बाद राजपूत के दल द्वारा प्रकाशित शोधपत्रों की छानबीन शुरू हुई। पता चला है कि पिछले कुछ वर्षों में इस समूह ने कई शोधपत्रों की चोरी करके उन्हें अपने नाम से छपवाया है। पाया गया कि जोशी व राजपूत का एक ताज़ा शोध पत्र तो स्टैन्फर्ड की भौतिकशास्त्री रेनाटा कैलोश के 1996 में प्रकाशित एक शोधपत्र की लगभग अक्षरशः नकल था।